आलौकिक दीपोत्सव

आराध्य प्रभु श्रीरामकी पावन नगरी उत्तर प्रदेशके अयोध्यामें आयोजित दसवां दीपोत्सव न केवल ऐतिहासिक रहा, बल्कि इसकी भव्यताने इसे अलौकिक बना दिया। अयोध्या एक बार फिर अद्‌भुत आध्यात्मिक उल्लास, भक्ति और प्रकाशके महासागरमें परिवर्तित हो गया। सरयूके पावन तटपर जब लाखों दीपक एक साथ प्रज्वलित हुए तो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि धरतीपर तारोंका संसार उतर आया है। रामकी पैड़ी सहित ५६ घाटोंपर एक साथ ३० लाख सात हजार ५१८ दीपक जलाये गये। शनिवारको सायंकाल पहला दीपक उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णनने जलाया। दीपोंकी अविरल श्रृंखलाने पूरी रामनगरीको अलौकिक आभासे भर दिया। यह आयोजन केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि भारतकी सांस्कृतिक चेतना, सनातन परम्परा और सामूहिक जन-भागीदारीका विराट प्रदर्शन बन गया। सूर्यास्तके साथ एक-एक करके दीप प्रज्वलित होने लगे और कुछ ही समयमें सम्पूर्ण घाट क्षेत्र स्वर्णिम प्रकाशसे जगमगा उठे। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर परिसर भी एक लाख दीयोंसे आलोकित हुए। आयोजनको सफल बनानेमें ३५ हजारसे अधिक स्वयंसेवकोंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस बार दीपोत्सवमें भगवान श्रीरामके अयोध्या आगमन और राज्याभिषेककी परम्परागत कथाको विशेष आकर्षणके साथ प्रस्तुत किया गया। शोभा यात्रामें रामायणके विभिन्न प्रसंगोंपर आधारित २१ झाकियां भी आकर्षणका केन्द्र रहीं। ढोल-नगाड़ों शंखनाद और जय श्रीरामके उद्‌घोषके बीच शोभायात्रा रामपथसे होती हुई रामकथा पार्क पहुंची। आधुनिक तकनीक और पारम्परिक आस्थाका अद्‌भुत समन्वय इस बारके दीपोत्सवकी विशेष उपलब्धि रही। २१०० स्वदेशी ड्रोनोंकी सहायतासे आसमानमें रामायणके विभिन्न प्रसंगोंका मनमोहक प्रदर्शन किया गया था। लेजर शो और आतिशबाजीने आयोजनकी भव्यता बढ़ा दी। दीपोत्सवकी सबसे बड़ी विशेषता व्यापक जन-भागीदारी रही। छात्रों, स्वयंसेवकों, कलाकारों, संतों और स्थानीय नागरिकोंका विशेष योगदान रहा। अयोध्यामें दीपोत्सवकी शुरुआत २०१७ में हुई और अब यह निरन्तर आयोजित हो रहा है। इससे पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्थाको प्रोत्साहन मिला है। अयोध्या अब केवल धार्मिक तीर्थ स्थल नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, आस्था, सांस्कृतिक चेतना और पर्यटनका महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है। यह दीपोत्सव अब धार्मिक आयोजनसे आगे बढ़कर भारतकी कूटनीति, पर्यटन विकास, स्थानीय अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय पहचानका महत्वपूर्ण माध्यम बन रहा है। दीपोत्सवके आयोजनकी भव्यता जन-जनकी भावनाओंसे जुड़ गयी है।

सेवानिवृत्ति और प्रतिष्ठा

सर्वोच्च न्यायालयका छत्तीसगढ़ सरकारके पांच कर्मचारियोंके अनिवार्य सेवानिवृत्तिके फैसलेको बरकरार रखना उचित और अनुपयोगी कर्मचारियोंके लिए बड़ा सन्देश है। अनिवार्य सेवानिवृत्ति कोई दण्ड नहीं है और न तो इसे प्रतिष्ठाका प्रश्न बनाया जा सकता है। इस सम्बन्धमें कोर्टका यह कहना महत्वपूर्ण है कि अनिवार्य सेवानिवृत्तिका आदेश देना न तो दण्डात्मक होता है और न ही इससे उन कर्मचारीकी प्रतिष्ठापर आंच आती है। यानी ऐसे आदेशसे कर्मचारीके आचरणपर कोई आक्षेप नहीं लगता और न ही वह किसी कदाचारका दोषी पाया गया है। इस सन्दर्भमें न्यायमूर्ति मनमोहन और न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखरकी पीठका यह कहना भी महत्वपूर्ण है कि ऐसा फैसला सक्षम अधिकारीके इस आकलनपर आधारित होता है कि सम्बन्धित कर्मचारीको सेवामें बनाये रखना अब जनहितमें नहीं है। इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि सरकारी विभागोंमें कर्मचारियोंकी नियुक्ति जनताकी सेवा और सरकारी कार्यको सुचारु रूपसे चलानेके लिए की जाती है। ऐसी स्थितिमें यदि कोई कर्मचारी उपयोगी नहीं रह जाता तो उसे पदपर बनाये रखनेका औचित्य ही क्या है। हालांकि ऐसे आकलन केवल अटकलों या मनमर्जीपर आधारित नहीं हो सकता। इसके लिए रिकार्डमें उपलब्ध ठोस और प्रासंगिक सामग्रीका होना जरूरी है। कोई कर्मचारी मात्र इस आधारपर अनिवार्य सेवानिवृत्तिके आदेशको चुनौती नहीं दे सकता कि समान सेवा रिकार्ड वाले किसी अन्य अधिकारीके खिलाफ ऐसी काररवाई नहीं की गयी है, क्योंकि किसी अधिकारीकी उपयोगिता समाप्त हो गयी है या उसे सेवामें बनाये रखना प्रशासनिक दक्षताके लिए नुकसानदेह होगा, इसका अन्तिम आकलन करना कार्यपालिकाका अधिकार है। इसलिए इसे चुनौती नहीं दी जा सकती है। किसी भी कर्मचारीको सेवामें बनाये रखना जनहितमें होना चाहिए, केवल पद भरनेके लिए नहीं।

लोक संवाद

अति आत्मविश्वास

महोदय,-उत्तर प्रदेशकी चुनावी बिसातपर केन्द्रीय स्वराष्ट्रमंत्री अमित शाहने लखनऊमें आयोजित भाजपाकी प्रदेश कार्यसमितिकी बैठकसे विपक्षको एक बेहद तीखा और आक्रामक संदेश दिया। शाहने मंचसे घोषणा की कि उत्तर प्रदेशमें भारतीय जनता पार्टीकी सरकार अंगदके पैरकी तरह मजबूतीसे जमी हुई है, जिसे कोई भी विरोधी ताकत हिला नहीं सकती। यह बयान आगामी विधानसभा चुनावोंके लिए भाजपाके संघटनिक अति-आत्मविश्वासका जीवंत प्रमाण तो है ही, लेकिन साथ ही यह लोकतांत्रिक मर्यादाओं और ऐतिहासिक सचसे परे एक राजसी अहंकारको भी प्रदर्शित करता है। स्वराष्ट्रमंत्रीका यह रूपक उत्तर प्रदेशमें मजबूत कानून-व्यवस्था और व्यापक संघटनिक मशीनरीके बलपर उपजे उस राजनीतिक घमंडको दिखाता है, जो जनताकी बदलती सोचको नजरअंदाज करनेकी भूल करता है। इतिहास गवाह है कि लोकतांत्रिक व्यवस्थामें कोई भी दल या सरकार स्थायी नहीं होती। जनताका एक वोट बड़ेसे बड़े राजनीतिक गढ़को पलभरमें ढहानेकी ताकत रखता है, परन्तु सत्ताके गलियारोंमें बैठे नेताओंको अक्सर यह गुमान हो जाता है कि उनका किला अभेद्य है। लखनऊके इस संबोधनमें स्वराष्ट्रमंत्रीने अयोध्याके राम मंदिरका उल्लेख करते हुए विपक्ष, विशेषकर समाजवादी पार्टी और कांग्रेसपर तीखा प्रहार किया। उन्होंने एक स्पष्ट तुलना प्रस्तुत करते हुए विपक्षको पुरानी घटनाओंपर घेरा और अपनी उपलब्धियोंको सर्वोपरि बताया। शाहने कांग्रेस और सपाके शीर्ष नेतृत्वको खुली चुनौती देते हुए कहा कि भाजपा विशेष सत्रमें हर एक मुद्देपर सीधी चर्चाके लिए तैयार है। मंचसे गूंजती यह चुनौती जितनी विपक्षके लिए थी, उतनी ही उसमें खुदको अपराजेय माननेका दंभ भी छिपा हुआ था। शाहने दावा किया कि बदलते उत्तर प्रदेशके दमपर भाजपा एक बार फिर प्रचंड बहुमतके साथ सरकार बनाने जा रही है और समान नागरिक संहिताको लागू करेगी। लेकिन राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि लोकतंत्रकी सबसे बड़ी खूबी यही है कि यहां सत्ताएं आती-जाती रहती हैं। इंदिरा गांधीके आपातकालके दौरसे लेकर हालके वर्षोंमें बड़े-बड़े राजनीतिक सूरमाओंके पतनतक, भारतीय लोकतंत्रने बार-बार साबित किया है कि जनता जब करवट बदलती है तो अंगदके पैरका दावा करने वाली ताकतें भी उखड़ जाती हैं। एक सजग लोकतंत्रमें इस तरहके घमंडभरे बयानोंको जनता अपनी ताकतके अपमानके रूपमें भी देख सकती है, क्योंकि यहां अंतिम निर्णय किसी नेताके दावेसे नहीं, बल्कि आम नागरिककी अंगुलीकी एक चोटसे ईवीएम मशीनपर तय होता है। अमित शाहका यह अंगदका पैर वाला बयान जहां संघटनिक स्तरपर कार्यकर्ताओंको लामबंद करनेका एक प्रयास है, वहीं दूसरी ओर यह सत्ताके उस चरम अहंकारको भी बेनकाब करता है जो खुदको जनताकी अदालतसे ऊपर समझनेकी भूलकर बैठता है। चुनावी बिसातपर दावे चाहे जो भी किये जायं, परन्तु असली फैसला तो जनताकी मर्जीसे ही तय होगा, जो लोकतंत्रकी वास्तविक मालिक है। **-सूर्यदीप कुशवाहा, वाराणसी।**

चिन्तनीय प्रदूषणपर राजनीति

त्योहार खुशियां बांटनेके लिए होते हैं, सांसोंमें जहर घोलनेके लिए नहीं। यदि उत्सवकी चमकके पीछे आसमान धुएंसे भर जाय, बच्चों और बुजुर्गोंका दम घुटने लगे तथा आम आदमी स्वच्छ हवाके लिए तरसने लगे तो हमें अपनी उत्सव परम्पराओं और सामाजिक जिम्मेदारियोंपर गम्भीरतासे विचार करना होगा।

❐ **ललित गर्ग**

आज प्रदूषण जैसी जीवन-मरणकी समस्यापर राजनीतिका धुआं छाने लगा है। जब लोगोंकी सांसें संकटमें हों, तब धर्म, जाति और राजनीतिक विचारधाराओंके चश्मेसे समस्याको देखना न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि सामाजिक संवेदनहीनताका प्रमाण भी है। अभिनेत्री और पर्यावरण कार्यकर्ता दीया मिर्जाने पटाखोंसे होने वाले वायु एवं ध्वनि प्रदूषणके प्रति जागरूकताका संदेश दिया। बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) ने अपने पर्यावरण अनुकूल अभियानमें उनका वीडियो जारी किया, लेकिन राजनीतिक विवादके बाद उसे हटा दिया गया। यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि प्रदूषणके खिलाफ आवाज उठाना आखिर विवादका विषय कैसे बन गया। किसी कलाकारका पर्यावरण संरक्षणके पक्षमें बोलना किसी धर्म या त्योहारका विरोध कैसे हो सकता है। मुंबई उच्च न्यायालय द्वारा वीडियो दोबारा जारी करनेका निर्देश इस बातका संदेश है कि जनहितकी आवाजको राजनीतिक दबावके आगे दबाया नहीं जाना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण किसी व्यक्ति, दल या धर्मकी जागीर नहीं, बल्कि समूचे समाजकी साझा जिम्मेदारी है। मुंबईका उदाहरण इस समस्याकी गम्भीरताको और उजागर करता है। सामान्यत: समुद्रकी हवाओं और भौगोलिक स्थितिके कारण मुंबईको दिल्लीकी तुलनामें अपेक्षाकृत बेहतर वायु संचारका लाभ मिलता है, लेकिन अब वहां भी प्रदूषणका संकट गहराने लगा है। बीएमसीकी पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट २०२५-२६ के अनुसार मुंबईके १४ वायु गुणवत्ता निगरानी केन्द्रोंमेंसे १३ पर पीएम-१० का वार्षिक औसत स्तर राष्ट्रीय निर्धारित सीमा ६० माइक्रोग्राम प्रति घनमीटरसे अधिक पाया गया। चेंबूर और बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्समें यह स्तर १२५ माइक्रोग्रामतक पहुंच गया। यह केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि महानगरीय विकासकी उस दिशापर प्रश्नचिह्न है जिसमें इमारतें तो ऊंची होती जा रही हैं, लेकिन लोगोंके हिस्सेकी स्वच्छ हवा छोटी होती जा रही है। यह समझना आवश्यक है कि मुंबई हो या दिल्ली, प्रदूषणका पूरा दोष केवल दीपावलीके पटाखोंपर डालकर हम अपनी जिम्मेदारीसे मुक्त नहीं हो सकते। निर्माण स्थलोंसे उड़ती धूल, सड़कोंपर जमा मिट्टी, वाहनोंका धुआं, औद्योगिक उत्सर्जन, कचरा जलाना और कमजोर शहरी नियोजन इसके बड़े कारण हैं। पटाखे प्रदूषणकी समस्याको त्योहारोंके दौरान और गम्भीर बनाते हैं, लेकिन प्रदूषणका स्रोत वर्षभर सक्रिय रहता है। इसलिए केवल दीपावलीके आसपास प्रतिबंध लगाना और फिर शेष वर्ष आंखें मूंद लेना समस्याका समाधान नहीं, बल्कि मौसमी सक्रियताका प्रदर्शन है। मुंबईमें १३ निगरानी केन्द्रोंका राष्ट्रीय मानकसे ऊपर होना बताता है कि समुद्री हवाओंके भरोसे पर्यावरणकी रक्षा नहीं की जा सकती। दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रकी स्थिति तो और भी चिन्ताजनक है। सर्दियोंकी शुरुआत होते ही तापमानमें गिरावट, हवाकी धीमी गति और वातावरणमें प्रदूषकोंके ठहरावसे वायु गुणवत्ता तेजीसे बिगड़ती है। दिल्ली, गाजियाबाद, नोएडा, गुरुग्राम और फरीदाबादके नागरिक हर वर्ष इस जहरीले वातावरणका सामना करते हैं। सुबहकी सैर स्वास्थ्यका माध्यम बननेके बजाय जोखिम बन जाती है। बच्चोंको खांसी, बुजुर्गोंको सांस लेनेमें परेशानी और पहलेसे बीमार लोगोंको अस्पतालोंके चक्कर लगाने पड़ते हैं। जिस हवामें जीवनका संगीत होना चाहिए, उसमें जब प्रदूषणका जहर घुल जाय तो विकासके तमाम दावे बेमानी लगने लगते हैं। इस संदर्भमें सर्वोच्च न्यायालयकी सक्रियता महत्वपूर्ण है। लेकिन प्रश्न यह है कि आदेश कागजपर सख्त और सड़कोंपर बेअसर क्यों रह जाते हैं। कानून बनाना पर्याप्त नहीं, उसका निष्पक्ष और कठोर क्रियान्वयन भी जरूरी है। यदि नियम तोड़ने वालोंको राजनीतिक संरक्षण या प्रशासनिक उदासीनताका लाभ मिलता रहा तो न्यायालयोंके निर्देश भी धुएंमें उड़ते रहेंगे। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जब दीया मिर्जा जैसी अभिनेत्री पर्यावरण संरक्षणका संदेश देती हैं तो उनके संदेशको राजनीतिक विवादमें उलझा दिया जाता है। मुंबई उच्च न्यायालयने ३ नवंबरको बीएमसीको उनका हटाया गया वीडियो दोबारा अपलोड करनेका निर्देश दिया और स्पष्ट किया कि पर्यावरणके मुद्देको राजनीतिक या सांप्रदायिक रंग देना अनुचित है। न्यायालयकी यह टिप्पणी हमारे लोकतांत्रिक विवेकको झकझोरने वाली है।

आज आवश्यकता है कि सरकारें, न्यायपालिका, नगर निकाय, राजनीतिक दल, उद्योग जगत, सामाजिक संघटन और आम नागरिक एक साझा संकल्पके साथ आगे आयें। निर्माण स्थलोंपर धूल नियंत्रण हो, वाहनोंके उत्सर्जनपर कठोर निगरानी हो, सार्वजनिक परिवहन मजबूत बने, कचरा जलानेपर रोक लगे और प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगोंकी जवाबदेही तय हो। साथ ही नागरिक भी कचरा जलाने और निजी वाहनोंके अंधाधुंध इस्तेमालसे बचें। अंतत: सवाल यह नहीं है कि दीपावलीपर पटाखे चलें या न चलें, सवाल यह है कि क्या हम आने वाली पीढ़ियोंको स्वच्छ हवा और सुरक्षित जीवन दे पायंगे। राजनीतिकी अपनी जगह है, धर्म और परम्पराओंका अपना महत्व है, लेकिन जीवनसे बड़ा कोई उत्सव और स्वास्थ्यसे बड़ी कोई परम्परा नहीं हो सकती। याद रखना होगा कि प्रदूषण किसीकी जाति, धर्म, भाषा या राजनीतिक विचारधारा देखकर फेफड़ोंमें प्रवेश नहीं करता। हवा सबकी साझा है और उसका संकट भी सबका साझा संकट है। दीपावलीके दीप जलें, घर-आंगन रोशन हों, खुशियां बिखरें, लेकिन किसीकी सांसोंमें अंधेरा न उतरे। यही समयकी पुकार है।



सवाल यह है कि क्या हम आने वाली पीढ़ियोंको स्वच्छ हवा और सुरक्षित जीवन दे पायंगे। राजनीतिकी अपनी जगह है, धर्म और परम्पराओंका अपना महत्व है, लेकिन जीवनसे बड़ा कोई उत्सव और स्वास्थ्यसे बड़ी कोई परम्परा नहीं हो सकती। याद रखना होगा कि प्रदूषण किसीकी जाति, धर्म, भाषा या राजनीतिक विचारधारा देखकर फेफड़ोंमें प्रवेश नहीं करता। हवा सबकी साझा है और उसका संकट भी सबका साझा संकट है। यही समयकी पुकार है और यही सच्चे उत्सवका विवेकपूर्ण अर्थ है।

बच्चोंमें बढ़ता हिंसक व्यवहार

बच्चोंकी सुरक्षाका प्रश्न सार्वजनिक स्थान और डिजिटल दुनियातक फैला हुआ है। बाल सुरक्षाका अर्थ केवल शारीरिक शोषणसे बचाना नहीं, बल्कि उन्हें सामाजिक और डिजिटल दुनियामें भी सुरक्षित वातावरण देना है।

❐ **डा. अर्चना शर्मा**

भारतमें बच्चोंकी सुरक्षाके सामने कई तरहकी चुनौतियां हैं। शारीरिक और यौन शोषण, बाल श्रम, बाल विवाह, मानव तस्करी, ऑनलाइन उत्पीड़न, साइबर बुलिंग, असुरक्षित परिवहन तथा मानसिक स्वास्थ्यसे जुड़ी समस्याएं बच्चोंके अधिकारों और विकासको प्रभावित करती हैं। भारतमें बच्चोंकी सुरक्षाके लिए कई कानूनी और संस्थागत व्यवस्थाएं मौजूद हैं। बाल यौन अपराधोंसे संरक्षण अधिनियम यानी पॉक्सो, २०१२ बच्चोंके विरुद्ध यौन अपराधोंको रोकने और उनसे जुड़े मामलोंमें काररवाईका कानूनी आधार प्रदान करता है। किशोर न्याय, बालकोंकी देखरेख और संरक्षण, अधिनियम, २०१५ कानूनसे संघर्षरत बच्चों और देखरेखकी जरूरत वाले बच्चोंके संरक्षण, पुनर्वास तथा पुन: समाजीकरणकी व्यवस्था करता है। वहीं, मिशन वात्सल्य बच्चोंकी देखभाल और संरक्षणसे जुड़ी सेवाओंको मजबूत करनेका प्रयास है। इसके अंतर्गत चाइल्ड हेल्पलाइन १०९८, २४ घंटे संकटमें फंसे बच्चोंतक सहायता पहुंचानेके लिए संचालित है और आपातकालीन सेवा ११२ से एकीकृत है। सरकारने २०२५ में मिशन वात्सल्य पोर्टलको भी उन्नत किया, ताकि बाल संरक्षणसे जुड़े विभिन्न विभागोंके बीच समन्वय बेहतर हो सके। लेकिन कानून और योजनाएं तभी प्रभावी होती हैं, जब वे जमीनपर बच्चोंतक पहुंचें। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरोके २०२२ के आंकड़ोंके अनुसार देशमें बच्चोंके विरुद्ध अपराधके १,६२,४४९ मामले दर्ज हुए। यह संख्या केवल कानूनी चुनौती नहीं, बल्कि सुरक्षा, जागरूकता और समयपर सहायताकी आवश्यकताको भी रेखांकित करती है। बच्चोंके साथ होने वाले अपराधोंकी रोकथामके साथ-साथ उन परिस्थितियोंको समझना भी जरूरी है, जिनमें बच्चे स्वयं हिंसक व्यवहारकी ओर बढ़ते दिखाई देते हैं।

हालके वर्षोंमें स्कूलों और सार्वजनिक स्थानोंपर कम उम्रके बच्चोंके बीच मारपीट, धमकी, समूहमें किसी बच्चेको निशाना बनाना और आक्रामक व्यवहारकी खबरें चिन्ता पैदा करती हैं। हालांकि ऐसी घटनाओंके आधारपर यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं कि १३ वर्षसे कम उम्रके सभी बच्चोंमें हिंसा बढ़ रही है। इसके लिए आयु-विशिष्ट और तुलनात्मक राष्ट्रीय आंकड़ोंकी जरूरत है। फिर भी किसी बच्चेका बार-बार हिंसक होना एक चेतावनी है, जिसे केवल अनुशासनहीनता कहकर अनदेखा नहीं किया जा सकता। उसके पीछे उपेक्षा, घरेलू तनाव, बुलिंग, भावनात्मक कठिनाई, एकल परिवार, हिंसक सामग्रीका संपर्क या साथियोंका दबाव जैसे अनेक कारण हो सकते हैं। मीडिया और ऑनलाइन गेमिंगकी भूमिकापर भी संतुलित दृष्टि आवश्यक है। मनोवैज्ञानिकोंके अनुसार एकल परिवारोंमें माता-पिता बच्चोंको ज्यादा समय नहीं दे पाते हैं। अक्सर बच्चे टीवी और मोबाइलपर अपना समय व्यतीत करते हैं। परन्तु ये दोनों ही गतिविधियां कई बार माता-पिताकी निगरानीके बिना होती हैं। टीवी और डिजिटल मीडिया बच्चोंको कुछ नया सीखने, रचनात्मकता और मनोरंजनके अवसर देते हैं, लेकिन बिना निगरानीके हिंसक सामग्री, अपमानजनक भाषा और आक्रामक व्यवहारके लगातार संपर्कमें रहना चिन्ताका विषय हो सकता है। यदि कोई बच्चा गेममें बार-बार हिंसाको समस्या सुलझानेका तरीका देखता है और फिर वास्तविक जीवनमें किसी विवादके दौरान उसी तरह प्रतिक्रिया करता है तो अभिभावकों और शिक्षकोंको उसके व्यवहारपर ध्यान देना चाहिए। लेकिन केवल गेमपर प्रतिबंध लगा देना पर्याप्त नहीं है। बच्चेको यह समझाना भी जरूरी है कि डिजिटल दुनियामें दिखाई देने वाली हिंसा वास्तविक जीवनमें स्वीकार्य नहीं है। उम्रके अनुरूप सामग्री, स्क्रीन टाइमकी सीमाएं, आनलाइन मित्रों और चैटकी निगरानी तथा खुले संवादसे जोखिम कम किया जा सकता है। इस जिम्मेदारीका पहला केन्द्र परिवार है। माता-पिता बच्चोंके लिए केवल नियम बनाने वाले नहीं, बल्कि उनके व्यवहारके सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण भी हैं। घरमें गाली-गलौज, अपमान, मारपीट या हर समस्याका समाधान गुस्सेसे करनेका तरीका बच्चोंपर असर डाल सकता है। बच्चेको सुनना, उसकी भावनाओंको पहचानना, गलतीपर शांतिपूर्वक समझाना और हिंसाके बजाय संवादका रास्ता दिखाना जरूरी है। यदि बच्चा लगातार चिड़चिड़ा, भयभीत, अलग-थलग या आक्रामक हो रहा है तो उसे दंडित करनेसे पहले कारण समझने और आवश्यकता पड़नेपर परामर्श लेनेकी जरूरत है।

स्कूलों और समाजकी भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। विद्यालयोंमें बुलिंग-विरोधी स्पष्ट नीति, संवेदनशील शिक्षक, भरोसेमंद शिकायत व्यवस्था और काउंसलिंगकी सुविधा होनी चाहिए। पड़ोस, खेल समूह, मीडिया संस्थान और डिजिटल प्लेटफॉर्म बच्चोंके प्रति जिम्मेदार व्यवहारको बढ़ावा दें। किसी बच्चेके साथ दुर्व्यवहार या हिंसाकी घटनाको 'बच्चोंकी आपसी बात' कहकर टालना गलत है। बच्चेको सुरक्षित तरीकेसे बोलनेका अवसर देना और उसकी शिकायतको गम्भीरतासे लेना समाजका दायित्व है। यह समझना आवश्यक है कि बाल सुरक्षाका अर्थ केवल किसी घटनाके बाद काररवाई करना नहीं, बल्कि ऐसे वातावरणका निर्माण करना है, जहां जोखिमोंको पहले पहचाना जाय, बच्चोंकी बात सुनी जाय और उन्हें सहायता मांगनेका भरोसा मिले।



प्रकृतिकी अर्चना

❐ **रघोत्तम शुक्ल**

दीपावलीकी आगली तिथि यानी कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको गोवर्द्धन पूजाका पर्व मनाया जाता है। इसका उद्गम भगवन श्रीकृष्ण द्वारा इन्द्रके कोपके परिणाम स्वरूप ब्रजमें हुई अतिवृष्टिसे ब्रज वासियोंकी रक्षामें विद्यमान है, जो उन्होंने गोवर्द्धन पर्वतको अपने बायें हाथकी कनिष्ठिका अंगुलीपर उठाकर की थी। श्रीमद्भागवत पुराणके दशम् स्कंधमें आयी कथाके अनुसार कंस द्वारा प्रायोजित किये जा रहे उपद्रवोंसे ऊबकर श्रीकृष्ण और बलराम सहित समस्त ब्रजवासी गोकुलसे पब्रजन कर वृंदावन आ गये थे। श्रीकृष्णने देखा एक दिन नंद बाबा सहित समस्त ब्रजवासी एक याज्ञिक अनुष्ठान और विशाल पूजनका आयोजन कर रहे हैं। भगवान कृष्णके पूछनेपर नंद बाबा एवं अन्यने बताया कि हम लोग इंद्रदेवकी पूजाकी तैयारी कर रहे हैं। वे हमें वृष्टि देते हैं और इससे हमारी कृषि समृद्ध होती है। श्रीकृष्णने उन्हें कर्मके सिद्धान्त बताये, साथ ही दैवका अवलम्बन एवं पूजन छोड़ प्रकृति एवं समष्टिकी अर्चना एवं सम्मान करनेपर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह गोवर्द्धन पर्वत हमारी जीविकाका प्रत्यक्ष रक्षक है। हमारे गोधनको चारा देता है और हमारा हर भांति आश्रय है। क्यों न हम इन्द्रकी पूजा छोड़ गोवर्द्धन पर्वतकी समर्चना करें। ब्राह्मणोंको भोजन एवं दान अर्पित करें। गीतामें भी भगवानने 'योग: कर्मसु कौशलम्' कहा है और कर्मोपदेश दिया है। वैसे भी इन्द्र एक भोगी देवता हैं, जिन्होंने गौतम ऋषिकी पत्नी अहल्यासे छल कर समागम किया और ऋषि द्वारा अभिशप्त किये गये। श्रीकृष्णके समझानेपर ब्रजवासी मान गये और इन्द्र पूजा छोड़ उक्तानुसार गिरि, गो, विप्र आदिका पूजन, सम्मान आदि करके दान, गिरि परिक्रमा की गयी। उधर अपनी अवहेलना देख इन्द्रने कुपित हो प्रलय कालीन मेघोंके गण 'सांवर्तक' को बुला लिया और ब्रजमें अति वृष्टि प्रारम्भ करनेका आदेश दे दिया। ब्रजमें त्राहि-त्राहि मच गयी। तब भगवान कृष्णने अपनी बाएं हाथकी छोटी अंगुलीपर गोवर्द्धन उखाड़ कर धारण कर लिया और उससे हुए विशाल गड्ढेमें सभी ब्रजवासियोंको गोधन सहित आश्रय लेनेको कहा। ऐसा ही हुआ और सबकी रक्षा हो गयी। अंतत: एक सप्ताहतक वृष्टि करके इन्द्र पस्त हो गये और वृष्टि बंद कर दी। ब्रजवासी मुदित हो अपनी सामान्य स्थितिमें आ गये। गोवर्द्धन पूजाका यही पौराणिक वृत्तांत आधार है, जो इस वर्ष १० नवम्बरको है। चूंकि अमावस्या ९ तारीखकी दोपहरतक है, अत: उदया तिथिको मान्यता देते हुए प्रतिपदा १० को होगी। गोवर्द्धन पूजा उसी दिन होगी।

संघटनात्मक शक्ति विस्तारकी ओर विपक्ष

❐ **रोहित माहेश्वरी**

हालमें दिल्लीके ऐतिहासिक रामलीला मैदानमें 'इंडिया' ब्लॉक द्वारा आयोजित महारैली देशके राजनीतिक हलकोंमें तीखी बहसका केन्द्र बनी हुई है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और 'वोट चोरी' के आरोपों एवं मतदाता सूचीमें गड़बड़ीके खिलाफ बुलायी गयी इस रैलीमें विपक्षने अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। 'वोट चोरी' रैली सफल रही अथवा नहीं रही, इसपर पक्ष-विपक्षके अपने अपने तर्क हैं। विपक्षकी ओरसे दावा किया जा रहा था कि रैलीमें करीब दस लाख लोग पहुंचेंगे, लेकिन धरातलपर मैदानका लगभग ४० फीसदी हिस्सा खाली दिखाई दिया। राजनीतिक विश्लेषकोंके एक वर्गका मानना है कि विपक्ष द्वारा उठाये जा रहे तकनीकी मुद्दे जैसे मतदाता सूची पुनरीक्षण या संस्थागत अनियमितताएं आम जनताको सीधे प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं। यही कारण है कि २१ विपक्षी दलोंके एक साथ आनेके बावजूद आम नागरिकोंकी भागीदारी बेहद सीमित रही। बीजेपी नेताओंका आरोप है कि चुनावमें बार-बार मिल रही हार और जनता द्वारा खारिज किये जानेके बाद, यह रैली केवल विपक्षकी राजनीतिक हताशाको बाहर निकालनेका एक माध्यम मात्र थी, जिससे उन्हें कोई जमीनी लाभ नहीं मिला। हां इस रैलीके माध्यमसे इंडिया ब्लाक एक संदेश देनेमें सफल रहा कि कि मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार गुप्तके खिलाफ 'देशद्रोह' का केस चलाया जायगा और उन्हें जेलमें भेजा जायगा। यह तभी संभव होगा, जब ज्ञानेश अपने संवैधानिक पदसे इस्तीफा दे दें अथवा संसदमें उनके खिलाफ 'महाभियोग' प्रस्ताव पारित हो जाय। फिलहाल दोनों ही स्थितियां संभव नहीं लगतीं। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधीने साफ कहा है कि हम प्रधान मंत्री मोदी और स्वराष्ट्रमंत्री अमित शाहको कहीं जाने नहीं देंगे, क्योंकि वे 'वोट चोरी' की आपराधिक साजिशमें संलिप्त रहे हैं। उनपर कानूनी काररवाई की जायगी। यह भी तभी संभव होगा, जब केन्द्रमें विपक्षके 'इंडी' गठबंधनकी सरकार होगी और राहुल गांधी प्रधान मंत्री होंगे। सर्वोच्च अदालत भी कानूनी काररवाईपर फैसला दे चुकी होगी! कांग्रेसके ९९ सांसदों और अकेली भाजपाके २४० सांसदोंकी संख्याके बीच बहुत बड़ा फासला है। यदि २०२४ का संसदीय चुनाव 'अवैध' था तो सिर्फ प्रधान मंत्री, स्वराष्ट्रमंत्री और भाजपा सांसदोंके ही चुनाव अवैध नहीं थे, बल्कि नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसदोंके निर्वाचन भी अवैध हैं। लोकसभाके समूचे ५४३ सांसदोंके चुनाव भी अवैध हैं। क्या भारत जैसे लोकतंत्र और संवैधानिक देशमें अवैध संसद काम कर सकती है। क्या नेता प्रतिपक्षका यह कथन देशके मतदाताओं, जनादेश, लोकतंत्र और संविधानका मजाक नहीं उड़ा रहा है। दरअसल यह खास किस्मकी उत्तेजना, तैश, आवेश और कुण्ठामें बोला गया कथन है। चुनाव आयोगने २८ अक्तूबर, २०२५ को 'विशेष गहन पुनरीक्षण' (एसआईआर) का अभियान बिहारसे शुरू किया था तो मई-जून, २०२४ के लोकसभा चुनावमें किसने और कैसे 'वोट चोरी' की। एसआईआर कर्नाटक, तेलंगाना, केरलमें भी किया गया है, जहां कांग्रेसकी सरकारें हैं। गौरतलब यह है कि जनवरी, २०२४ में सहकारी सचिवके पदसे सेवानिवृत्त होनेके बाद ज्ञानेश कुमार गुप्तको १५ मार्चको, सुखबीर सिंह संधुके साथ, चुनाव आयुक्तके संवैधानिक पदपर नियुक्त किया गया था। तब राजीव कुमार सीईसी थे। यदि तीनों चुनाव आयुक्तोंके बीच सहमति न हो तो कोई भी निर्णय लागू नहीं किया जा सकता। यही हालिया संकट और विवाद है। 'वोट चोरी' तो बेहद गम्भीर और साजिशाना हरकत है। फिलहाल विपक्षकी लगातार राजनीतिक मुहिमके बावजूद 'वोट चोरी' एक राष्ट्रीय मुद्दा, आम आदमीके सरोकारका मुद्दा नहीं बन पाया है। जिन १३.३७ करोड़ मतदाताओंके नाम काटे गये हैं, उनमें करीब २.८८ करोड़ नाम ऐसे हैं, जो 'दिवंगत' हो चुके हैं और एक करोड़से अधिक लोगोंके पास दोहरे मतदाता पहचान-पत्र हैं। यह अवैध और असंवैधानिक है। राजधानी दिल्लीमें ही ४७ लाखसे अधिकके नाम 'अनिश्चित' हैं। यदि वे आंदोलित होते तो दिल्लीकी सड़कें अवरुद्ध हो जातीं। हिंसा भी भड़क सकती थी! यदि उनमेंसे दो लाख मतदाता भी विपक्षकी रैलीके साथ जुड़ते तो एक असामान्य भीड़ सड़कोंपर बिछ सकती थी! किसी भी सरकारके लिए वह स्थिति चुनौतीपूर्ण होती, लेकिन ऐसी चुनौती देशके किसी भी कोनेसे दिखाई नहीं दी है। राजनीतिक विश्लेषकोंके मुताबिक सत्तासे नाराज होना और किसी दूसरी पार्टीको उसका विकल्प स्वीकार करना अलग बातें हैं। मतदाता यह भी देखता है कि जिस कामको लेकर उसे शिक